पाठ–7
कहता है जोकर

मूल पाठ :–

बचपन में राजू अपनी टीचर से एक प्रश्न पूछता है। उसके सवाल में जिज्ञासा थी। मासूमियत थी और उत्सुकता थी उसका सवाल था– ' मैंने क्राइस्ट को जहाँ देखा है', जब भी देखा है उदास देखा है, कभी हँसते हुए नहीं देखा। ऐसा क्यूँ?' टीचर ने इसका जवाब इस तरह दिया–क्राइस्ट इसलिए उदास है क्योंकि उसके बच्चे, सारी दुनिया के आदमी दुखी है। जब उसके बच्चे दुखी हैं, तो भला वह खुश कैसे रह सकता है। उसके चेहरे पर मुसकान कैसे आ सकती है? अपने बच्चों के दुःख में वह भी दुखी हो जाता है। राजू ने सोचा कि वह दुखी नहीं होगा। ताकि क्राइस्ट को उसके दुख से दुखी न होना पड़े! इस तरह वह क्राइस्ट के दुख कुछ तो कम कर ही सकता है! राजू क्राइस्ट को भी हँसाना चाहता है। वह कहता है– आय विल मेक क्राइस्ट लाफ। 'मेरा नाम जोकर' का एक–एक दृश्य अपने–आप में संदेश है। जब एक बच्चा यह कोशिश कर सकता है कि क्राइस्ट उसके कारण दुखी न हो, तो क्या यह कोशिश बड़े नहीं कर सकते! क्राइस्ट की मुसकान तभी लौट सकती है। जब उसके सभी बच्चों के चेहरे पर मुसकान होगी। यह दृश्य हमें संदेश देता है कि क्या हम प्रयास नहीं कर सकते कि इस दुनिया में मुसकान बिखरे, हँसी फैले। कोई दुखी न हो! कोई उदास न हो!

फिल्म में राजू की माँ मर जाती है और जोकर के शो का समय हो जाता है। राजू को स्टेज पर जोकर का अभिनय भी करना है। पर, इस समय वह दुनिया को कैसे हँसा सकता है? आखिर वह भी एक आदमी है! नहीं। सर्कस का मालिक उससे कहता है– ''राजू मत भूलो, तुम जोकर हो और जोकर कभी नहीं रोता। जाओ तुम्हारा टाइम आ गया है। शो मस्ट गो ऑन।'' शो चलते रहना चाहिए। तमाशा कभी नहीं

रूकना चाहिए। राजू के दुख से अधिक महत्त्व 'शो' का है। वह नहीं रूकना चाहिए। सच भी है, जब जिंदगी नहीं रूकती, तो शो क्यों रूके!

माँ के मरने के समय भी राजू जोकर की भूमिका निभाने चला जाता है। सुख–दुख जिंदगी के अनिवार्य अंग हैं। किसी सुख या किसी दुख के लिए जिंदगी कभी नहीं रूकती। जिंदगी भी एक तमाशे की ही तरह है। हमें जो रोल मिला है, उसे निभाना है।

सर्कस दर्शकों से खचाखच भरा है। इस शो में मैरी अपने पति डेविड के साथ, रूस से इसीलिए आई मैरीना, और मीना अपनी किस्मत के मालिक कुमार के साथ मौजूद है। सर्कस मालिक जोकर के अंतिम शो की घोषणा करता है। इसके बाद शो आरंभ हो जाता है। सर्कस के रिंग में एक ऑपरेशन थिएटर दिखाई पड़ता है जहाँ बड़े–बड़े गैस सिलेंडर, विशाल खून की बोतल, बड़ी–बड़ी छुरियाँ और कैंचिया रखी हुई थीं। एक आदमी जिसका दिल जरूरत से ज्यादा बड़ा हो गया है, ये सभी उसका इलाज करने के लिए जुटे हैं। सर्कस के तंबू में ऊपर से दिल के आकार का एक बड़ा विशाल गुब्बारा नीचे उतरता है और उस गुब्बारे से जोकर निकलता है। उसे देखकर डॉक्टरों को आश्चर्य होता है कि वह दिल है या आदमी? अब उसका इलाज शुरू होता है। डॉक्टर उसे बताता है कि अब दुनिया छोटी होती जा रही है, तो इसके विपरीत तुम्हारा दिल बड़ा होता जा रहा है। इसका तो तुरंत इलाज होना चाहिए। सभी डॉक्टर पकड़ कर उसे ऑपरेशन टेबल पर लिटा देते हैं और उसका ऑपरेशन शुरू हो जाता है। बड़े डॉक्टर ने ऑपरेशन करके जोकर का दिल निकाल लिया। एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के हाथों में जाते हुए उस दिल का आकार बड़ा होता जाता है। डॉक्टर कहते हैं – इस दिल में तो पूरी दुनिया ही समा सकती है!

हमारा दिल छोटा हो गया है। हम दूसरे के सुख–दुख से जुड़ना नहीं चाहते। बस अपनी दुनिया में मग्न रहते हैं। जोकर हम सबसे अलग है। क्योंकि, वह किसी को दुख नहीं देता। वह सबको हँसाता है। अपने दुखों को छिपाकर दूसरे के चेहरे पर मुसकान बिखेरता है। वह दुनिया के रंग–ढंग से अलग है। हम सभी अपने स्वार्थ में सिमटते जा रहे हैं, हमारा दिल छोटा होता जा रहा है, जोकर के साथ ऐसा नहीं है। उसका दिल बड़ा होता जा रहा है। वह अपने दिल में सबको समेट लेना चाहता है। यानी, सर्कस और शहर

ही नहीं समूची दुनिया में खुशियाँ बिखेर देना चाहता है। डॉक्टर इस बड़े दिल का इलाज करते हैं। मानो इस छोटी दुनिया में बड़े दिलवालों के लिए कोई जगह नहीं है।

राजू ऑपरेशन टेबल से उतर जाता है। वह सबसे पूछता है– किसी ने देखा है मेरा दिल। कोई जानता है मेरा दिल। किसने चुराया है मेरा दिल। मैरी, मैरीना और मीना से भी आँखों ही आँखों पूछता है– टटोलकर अपने भीतर देखो, अपने भीतर मेरा दिल धड़कता हुआ पाओगे। राजू यानी जोकर, जो सारी दुनिया को प्यार लुटाता है, उसे भी किसी का प्यार चाहिए। मैरी, मैरीना और मीना; तीनों ने राजू से मुहब्बत की थी। लेकिन इनमें से कोई भी उसे अपना नहीं सका।

डॉक्टर जोकर को हिदायत देते हैं कि वह अपना दिल सँभाल कर रखे, यदि वह इसी तरह बढ़ता जाएगा तो एक दिन उसमें सारी दुनिया समा जाएगी। सारी दुनिया समा जाएगी यानी सारी दुनिया का सुख–दुख। जोकर के लिए इससे अच्छी बात क्या हो सकती थी! हम भले ही अपने सुख–दुख में सिमटे रहते हैं, हमारी दुनिया सिमटी रहती है, पर जोकर के साथ ऐसा नहीं होता है। वह तो समूची दुनिया में हँसी बाँट देना चाहता है। डॉक्टर की बात पर वह खुश हो जाता है। वह अपना दिल बार–बार उछालता है कि अचानक उसका दिल गिरकर सैकड़ों टुकरों में बिखर जाता है। उसके हर टुकड़े में उसकी जिंदगी की कहानी दिखाई देती है।

'मेरा नाम जोकर' फिल्म में राजकपूर ने अपनी जिंदगी का सब कुछ समर्पित कर दिया था। सब कुछ का अर्थ है– अपने सपन, अपनी प्रतिभा, अपना धन, सब कुछ। ''एक निर्माता के रूप में उन्होंने अंग्रजी की 'लेफ्ट नो स्टोन अनटर्न्ड' कहावत चरितार्थ की।'' निर्माता फिल्म का निर्माण करता है। फिल्म में वह केवल पैसा नहीं लगाता, बल्कि फिल्म की एक–एक चीज से उसका चुड़ाव होता है। कहानी, अभिनेता, गीत–संगीत सब से।'लेफ्ट नो स्टोन अनटर्न्ड' का अर्थ है– कोई कसर नहीं छोड़ना। इस फिल्म को बनाने में राजकपूर ने कोई कसर नहीं छोड़ी। वे इस फिल्म से व्यावसायिक और कलात्मक दोनों ऊँचाई प्राप्त करना चाहते थे।

बड़ा होकर राजू सर्कस में पहुँच जाता है। वह जोकर बन जाता है। यहीं उसके जीवन में मैरीना आती है। सबकुछ भूलकर वह मैरीना के प्रेम में डूब जाता है। मैरीना भी उसे प्यार करने लगती है। पर, राजू

को यह प्रेम भी नसीब न हुआ। मैरी के साथ उसकी उम्र बाधा बनी थी, मैरीना के साथ देशों की दीवार बाधा बन जाती है। मैरीना रूस की थी, रूस में उसके अपंग पिता थे, और वह उन्हें छोड़कर नहीं आ सकती थी।

राजू की जिंदगी में तीसरा प्यार बनकर मीना आती है। वह राजू के सहारे बुलंदियाँ पाती जाती है, और धीरे–धीरे इतना आगे बढ़ जाती है कि राजू की जिंदगी से दूर हो जाती है। राजू फिर खुद को टूटा हुआ, ठगा हुआ महसूस करता हे। पर, वह तो जोकर है! जोकर अपना दुख किसी पर जाहिर नहीं हाने देता है। वह हँसता रहता है, मुसकुराता रहता है, अपने आँसुओं को सबसे छिपाए रहता है।

हिन्दी फिल्मों के इतिहास में राजकपूर ऐसी शख्सियत का नाम है जो उठ–उठकर गिरा है और गिर–गिरकर उठा है। जिसने हर पराजय को चुनौती के रूप में स्वीकार किया है। उसने सिर्फ जीतना सीखा है, हारना नहीं।

'मेरा नाम जोकर ' के साथ ही राजकपूर ने एक नायक के रूप में फिल्मों से विदा ले ली। हालांकि वे फिल्मों से जुड़े रहे। फिल्में बनाते रहे। अपनी फिल्मों से मुस्कान बिखेड़ते रहे। लेकिन उनकी भूमिका बदल गई।

इस फिल्म के माध्यम से राजकपूर ने एक कलाकार की जिंदगी दिखानी चाही थी। एक ऐसे कलाकार की जिंदगी जो जोकर है। उन्होंने यह दिखाना चाहा था कि वह जोकर जो हँसता रहता है, दुनिया में हँसी बिखेरता रहता है; वह एक बहुत बड़ा इंसान है। वह न तो शोहरत के लोभ में फँसता है, न दौलत चाहता है, यहाँ तक कि किसी की मुहब्बत भी उसे बाँध नहीं पाती। दूसरों को खुश करने के लिए वह अपना सबकुछ लुटा सकता है।

जोकर भी इंसान है, कलाकार है; पर हम उसकी ओर इस तरह नहीं देखते जिस तरह से राजकपूर ने देखा था। राजकपूर ने दरअसल हमें देखना सिखाया था। एक महत्त्वपूर्ण बात यह भी है कि यह कहानी एक 'जोकर' की ही कहानी नहीं है, यह किसी भी कलाकार की कहानी हो सकती है। एक ऐसे कलाकार कि जो अपने सुख–दुख भुलाकर दूसरों को खुश रखना ही अपना लक्ष्य मानता है।

प्रह्लाद अग्रवाल